आकार IAS

Shaping Your Dreams

दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान एवं लोक प्रशासन

मुख्य परीक्षा

प्रश्नपत्र- 04 | इकाई- 02, 03, 04, एवं 05

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)

aakarias2014@gmail.com www.aakarias.com

9713300123, 6262856797, 6262856798

दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान एवं लोक प्रशासन
PHILOSOPHY, PSYCHOLOGY AND PUBLIC ADMINISTRATION

इकाई - 1

- **दार्शनिक/विचारक, सामाजिक सुधारक** - सुकारत, प्लेटो, अरस्तू, महावीर, बुद्ध, आचार्य शंकर, चार्वाक, गुरूनानक, कबीर, तुलसीदास, रवीन्द्रनाथ टैगोर, राजाराम मोहन राय, सावित्री बाई फुले, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द एवं सर्वपल्ली राधाकृष्णन।
- **Philosophers/Thinkers, Social Reformers -** Socrates, Plato, Aristotle, Mahavir, Buddha, Acharya Shankar, Charwak, GuruNanak, Kabir, Tulsidas, Ravindra Nath Tagore, Raja Ram Mohan Roy, Savitribai Phule, Swami Dayanand Saraswati, Swami Vivekanand, Maharshi Arvind and Sarvpalli Radhakrishnan.

इकाई - 2

- **मनोवृत्ति** - विषयवस्तु, तत्त्व, प्रकार्य : मनोवृत्ति का निर्माण, मनोवृत्ति परिवर्तन, प्रबोधक संप्रेषण, पूर्वाग्रह तथा विभेद, भारतीय संदर्भ में रूढ़िवादिता।
- **अभिक्षमता** एवं लोक सेवा हेतु आधारभूत योग्यताएँ, सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता एवं असमर्थकवादी, वस्तुनिष्ठता, लोक सेवा के प्रति समर्पण, समानुभूति, सहिष्णुता एवं कमजोर वर्गों के प्रति संवेदना/करूणा।
- **संवेगिक बुद्धि** - अवधारणा, प्रशासन/शासन में इसकी उपयोगिता एवं अनुप्रयोग।
- **व्यक्तिगत भिन्नताएँ।**
- **Attitude -** Content, Elements, Function Formation of Attitude, Attitudinal Change, Persuasive Communication, Prejudice and Discrimination, Stereotypes Orthodox in Indian context.
- **Aptitude -** Aptitude and foundational values for Civil Service, Integrity, Impartiality and Non-partisanship, Objectivity, Dedication to public service, Empathy, Tolerance and Compassion towards the weaker-sections.
- **Emotional Intelligence -** Emotional Intelligence-Concepts, their utilities and application in Administration and Governance.
- **Individual differences**

इकाई - 3

मानवीय आवश्यकताएँ एवं अभिप्रेरणा

- **लोक प्रशासन में नैतिक सद्गुण एवं मूल्य** - प्रशासन में नैतिक तत्व-सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व एवं पारदर्शिता, नैतिक तर्क एवं नैतिक दुविधा तथा नैतिक मार्गदर्शन के रूप में अन्तरात्मा, लोक सेवकों हेतु आचरण संहिता, शासन में उच्च मूल्यों का पालन।

Human Needs and Motivation

- **Ethics and Values in Public Administration -** Ethical elements in governance–Integrity, Accountability and Transparency, Ethical Reasoning and Moral Dilemmas, Conscience as a source of ethical guidance. Code of Conduct for Civil Servants, Implementation of Higher values in governance.

इकाई - 4

- **भ्रष्टाचार** - भ्रष्टाचार के प्रकार एवं कारण, भ्रष्टाचार का प्रभाव, भ्रष्टाचार को अल्पतम करने के उपाय, समाज, सूचनातंत्र, परिवार एवं व्हिसलब्लोअर (Whistleblower) की भूमिका, भ्रष्टाचार पर राष्ट्रसंघ की घोषणा, भ्रष्टाचार का मापन, अंतर्राष्ट्रीय पारदर्शिता (ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल), लोकपाल एवं लोकायुक्त।
- **Corruption -** Types and Causes of Corruption, Effects of corruption, Approaches to minimizing corruption, Role of society, Media, Family and Whistleblower, United Nation Convention on Corruption, Measuring corruption, Transparency International, Lokpal and Lokayukt.

इकाई - 5

- **केस स्टडीज** - पाठ्यक्रम में सम्मिलित विषयवस्तु पर आधारित।
- **Case Studies -** Based on the contents of the syllabus.

परीक्षा योजना

सामान्य अध्ययन का चतुर्थ प्रश्न पत्र में **पूर्णांक 200 है** तथा **समय 03:00 घंटे** होगा।

इकाई	प्रश्न	संख्या	x	अंक	=	कुल अंक	आदर्श शब्द सीमा
इकाई-1	अति लघु उत्तरीय	05	x	02	=	10	10 शब्द/01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द/05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	20	=	20	200 शब्द
इकाई-2	अति लघु उत्तरीय	05	x	02	=	10	10 शब्द/01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द/05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	20	=	20	200 शब्द
इकाई-3	अति लघु उत्तरीय	05	x	02	=	10	10 शब्द/01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द/05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	20	=	20	200 शब्द
इकाई-4	अति लघु उत्तरीय	05	x	02	=	10	10 शब्द/01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द/05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	20	=	20	200 शब्द
इकाई-5	केस स्टडी	02	x	20	=	40	500 शब्द

नोट - प्रश्नों की संख्या आवश्यकतानुसार कम या अधिक की जा सकेगी।

विषय सूची (CONTENTS)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	मनोविज्ञान : सामान्य परिचय	01 – 03
02	मनोवृत्ति/अभिवृत्ति	04 – 22
03	प्रबोधन सम्प्रेषण	23 – 26
04	सामाजिक प्रभाव	27 – 30
05	पूर्वाग्रह एवं विभेद	31 – 40
06	रूढ़िवादिता	41 – 46
07	सांवेगिक/भावात्मक बुद्धि	47 – 53
08	अभिक्षमता एवं लोक सेवा हेतु आधारभूत योग्यताएं	54 – 69
09	व्यक्तिगत भिन्नताएं	70 – 74
10	नीतिशास्त्र	75 – 80
11	लोक प्रशासन	81 – 83
12	लोक प्रशासन में नैतिक सद्गुण एवं मूल्य/प्रशासनिक नैतिकता	84 – 90
13	शासन/प्रशासन में नैतिक तत्व	91 – 97
14	शासन में उच्च मूल्यों का पालन	98 – 101
15	नैतिक अभिशासन	102 – 107
16	लोकसेवकों हेतु आचरण संहिता	108 – 113
17	मानवीय आवश्यकताएं एवं अभिप्रेरणा	114 – 120
18	भ्रष्टाचार	121 – 129
19	भ्रष्टाचार को अल्पमत करने के उपाय	130 – 149
20	सामाजिक अंकेक्षण	150 – 152
21	नागरिक घोषणापत्र	153 – 156
22	भ्रष्टाचार पर राष्ट्र संघ की घोषणा	157 – 163
23	प्रकरण अध्ययन – पाठ्यक्रम में सम्मिलित विषयवस्तु पर आधारित	167 – 206
24	अभ्यास हेतु केस स्टडी	207 – 212

मनोविज्ञान
Psychology

- परिचय
- मनोविज्ञान का अर्थ एवं अवधारणा
- मनोविज्ञान की शाखाएं
- सामाजिक मनोविज्ञान
  - अर्थ एवं परिभाषा
  - कार्यक्षेत्र
  - उपयोगिता एवं महत्व
    - सैद्धांतिक उपयोगिता
    - व्यवहारिक उपयोगिता

परिचय
Introduction

मनुष्य के जीवन एवं जगत की समस्याओं को समझने के लिए अनेक विषय एवं शास्त्र भाग लेते हैं। समाजशास्त्र, राजनीतिक विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजव्यवस्था आदि विषय मानव जीवन की ही विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करते हैं, किन्तु इन सबके अध्ययन का केन्द्र बिन्दु अलग-अलग है। मनोविज्ञान भी इसी प्रकार के बौद्धिक प्रयास में संलग्न है।

मनोविज्ञान का अर्थ एवं अवधारणा
(Meaning and Concept of Psychology)

मनोविज्ञान का अंग्रेजी रूपान्तरण Psychology है, जिसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा के दो शब्दों साइक (Psyche) + लॉगॉस (Logos) शब्द से मानी जाती है। इसमें **साइक से आशय आत्मा** और **लॉगॉस का आशय अध्ययन** या **विवेचना** से है। अत: शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान **आत्मा के अध्ययन का विज्ञान** है। इस परिभाषा एवं अवधारणा का श्रेय प्राचीन ग्रीक दार्शनिक प्लेटो एवं अरस्तू को जाता है। किन्तु आगे चलकर विभिन्न मनोविज्ञानिकों ने इस परिभाषा एवं अवधारणा को पूर्णत: अस्वीकार कर दिया। क्योंकि आत्मा का वैज्ञानिक अध्ययन संभव नहीं है।

आगे चलकर अनुभववादी दार्शनिक लॉर्क एवं बर्कले ने मनोविज्ञान को **मन के विज्ञान** के रूप में परिभाषित किया। लॉर्क के अनुसार संसार की विभिन्न वस्तुओं का अनुभव मन के द्वारा होता है। विलियम जेम्स ने भी इसे मन का विज्ञान माना है, किन्तु मन भी आत्मा की तरह अमूर्त अवधारणा है और इसका वैज्ञानिक अध्ययन संभव नहीं है। अत: इस अवधारणा को उचित नहीं माना गया।

वस्तुत: मनोविज्ञान प्रारंभ में दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में विकसित हुआ। अत: इस पर दर्शन का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। चूंकि आत्मा एवं मन का वास्तविक स्वरूप प्रमाणित न हो पाने के कारण आगे चलकर इसे **चेतना के विज्ञान के रूप में** परिभाषित किया गया। इस अवधारणा के समर्थक वुण्ट एवं टिचनर थे। इन्हीं के प्रयासों से मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से अलग कर वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने की कोशिश की। आत्मा एवं मन जैसी अवधारणाओं की तरह ही चेतना भी एक प्रकार की अमूर्त अवधारणा है और इससे मनोविज्ञान का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट नहीं होता है। अत: इन अवधारणाओं का परित्याग कर दिया गया।

मनोविज्ञान को विज्ञान की श्रेणी में लाने का श्रेय 20वीं शताब्दी में व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों को है, जिनमें जे. बी. वॉटसन प्रमुख हैं। इन्होंने मनोविज्ञान को **व्यवहार के विज्ञान के रूप में** स्थापित किया है, जो कि सर्वमान्य मत है। मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है, जिसमें **प्रेक्षणीय व्यवहारों** (Observable Behaviour) व **मानसिक क्रियाओं** (Mental Processes) का अध्ययन किया जाता है।

प्रेक्षणीय व्यवहार में वे सभी व्यवहार शामिल हैं, जिनका हम प्रत्यक्ष कर सकते हैं, जैसे - हाव-भाव, चाल-चलन, बोलना, सुनना, खाना आदि। वहीं दूसरी ओर मानसिक प्रक्रियाओं में अनुभव, चिंतन एवं मनन को शामिल किया जाता है।

इस प्रकार निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि **निरीक्षण योग्य व्यवहार और उससे संबंधित मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन** ही मनोविज्ञान है। इसमें वह व्यवहार भी सम्मिलित है, जिनका प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण किया जा सकता है और इसमें वे प्रक्रियाएं भी सम्मिलित है, जिनका प्रत्यक्ष निरीक्षण संभव नहीं है, बल्कि उनका केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है।

मनोविज्ञान की शाखाएं (Branches of Psychology)

वर्तमान में मनोविज्ञान का क्षेत्र काफी व्यापक एवं इसकी समस्याएं भी अनगिनत है, क्योंकि जहां कहीं जीवन है, वहां व्यवहार है और जहां व्यवहार है, वहीं मनोविज्ञान का अध्ययन क्षेत्र भी है। इसका क्षेत्र इतना विस्तृत हो चुका है कि इसमें मनुष्यों, पशुओं एवं पक्षियों के व्यवहार का अध्ययन तक किया जाने लगा है। परिणामस्वरूप इसकी अनेक शाखाओं का जन्म हुआ, जो अलग-अलग विषयों का वैज्ञानिक अध्ययन करती है। इसकी कुछ प्रमुख शाखाएं निम्नलिखित हैं -

1. सामान्य मनोविज्ञान (General Psychology)
2. व्यवहारिक मनोविज्ञान (Applied Psychology)
3. बाल मनोविज्ञान (Child Psychology)
4. नैनादिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology)
5. कानूनी मनोविज्ञान (Legal Psychology)
6. वैयक्तिक मनोविज्ञान (Differential Psychology)
7. राजनीतिक मनोविज्ञान (Political Psychology)
8. सामाजिक मनोविज्ञान (Social Psychology)

सामाजिक मनोविज्ञान (Social Psychology)

❐ अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे समाज से अलग नहीं किया जा सकता। किसी भी समाज में रहने वाले व्यक्ति आपस में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित होते हैं। अत: उनके व्यवहार पर सामाजिक परिवेश का प्रभाव भी पड़ता है। यह प्रभाव आन्तरिक एवं बाह्य दोनों हो सकता है। जब उसके आन्तरिक व्यवहार का उसके सामाजिक परिवेश के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है, तो वह सामाजिक मनोविज्ञान कहलाता है।

इस प्रकार सामाजिक मनोविज्ञान वह विज्ञान है, जिसमें **सामाजिक परिस्थिति में व्यक्ति के व्यवहार एवं स्वरूप का अध्ययन** किया जाता है। एक सामाजिक वातावरण के लोगों के व्यवहार को एक व्यक्ति का किस प्रकार प्रभावित करता है और उस व्यक्ति के विचार, भावनाएं एवं क्रियाएं दूसरों से किस प्रकार प्रभावित होते हैं।

❐ कार्य क्षेत्र (Scope)

सामाजिक परिस्थिति में किए जाने वाले व्यवहार को सामाजिक व्यवहार कहा जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान में सामाजिक व्यवहार के पहलूओं का अध्ययन किया जाता है। अत: सामाजिक व्यवहार के भिन्न-भिन्न पहलू आपस में मिलकर समाज मनोविज्ञान के कार्य क्षेत्र का निर्माण करते हैं, जो कि निम्नलिखित हैं -

1. मनोवृत्ति (Attitude)
2. सामाजिक प्रभाव (Social Influence)
3. पूर्वाग्रह एवं विभेद (Prejudice and Discrimination)
4. रुढ़युक्तियां (Stereotypes)
5. व्यक्तिगत् भिन्नताएं (Individual Differences)
6. नेतृत्व (Leadership)
7. जनमत तथा प्रचार (Public Opinion and Propaganda)
8. समूह प्रभाव (Group Influence)
9. अफवाह (Rumour)
10. सामाजिक प्रत्यक्षण (Social Perception)

❐ उपयोगिता एवं महत्व (Utility and Importance)

आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान का क्षेत्र प्रतिदिन विस्तृत एवं व्यापक होता जा रहा है और इसकी प्रकृति दिन-प्रतिदिन वैज्ञानिक होती जा रही है। आधुनिक समाज मनोविज्ञान की सहायता से न केवल व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को समझा जा सकता है, बल्कि इस व्यवहार के संबंध में भविष्यवाणी भी की जा सकती है और इसे नियंत्रित भी किया जा सकता है। चूंकि यह व्यक्ति के व्यवहारिक एवं सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का अध्ययन करता है। अत: इसकी उपयोगिता एवं महत्व को दो अलग-अलग भागों में देख सकते हैं।

• सैद्धान्तिक उपयोगिता

1. यह हमें समाज विरोधी व्यवहार को समझने में मदद करता है। प्रत्येक समाज का अपना एक मानक तथा मूल्य होता है, जिसके अनुसार व्यक्तियो को व्यवहार करना पड़ता है। इन सामाजिक मानकों तथा मूल्यों का वैज्ञानिक अध्ययन कर मनोवैज्ञानिक यह बताने की कोशिश करते हैं कि अमूक व्यक्ति का व्यवहार समाज विरोधी क्यों है और इसका समाधान किस ढंग से हो सकता है।
2. यह व्यक्तियों के अन्त:क्रियाओं (Interaction) का अध्ययन सामाजिक परिवेश में करके कुछ इस प्रकार का नियम या सिद्धान्त तैयार करता है, जिससे एक स्वस्थ्य सामाजिक क्रम एवं व्यवस्था (Social Order and System) बनी रहे।
3. यह व्यक्तित्व के स्वस्थ विकास में मदद करता है। व्यक्तित्व के स्वस्थ विकास के लिए कौन-कौन सी सामाजिक परिस्थितियां महत्वपूर्ण एवं सहायक होगी। इसका निर्धारण सामाजिक मनोवैज्ञानिक करते हैं। दूसरे शब्दों में सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति को एक सफल, सजग एवं सभ्य नागरिक बनाकर एक आदर्श समाज बनाने में मदद करता है।
4. यह दूसरे व्यक्तियों का सही-सही प्रत्यक्षण (Perception) करने और उनके बारे में सही निर्णय लेने में मदद करता है।
5. यह आक्रमकता के क्षेत्र में प्रतिपादित सिद्धान्तों की सहायता से आक्रामक एवं हिंसक व्यवहार को समझने, उनके रोकथाम और उसे नियंत्रण करने में मदद करता है।

• व्यवहारिक उपयोगिता

1. प्रत्येक समाज की अपने-अपने मूल्य एवं संस्कृति होती है। अत: प्रत्येक समाज के व्यवहार भिन्न-भिन्न होते हैं। इस भिन्नता के कारण सामाजिक तनाव, युद्ध, शीतयुद्ध, पूर्वाग्रह, रुढ़युक्तियां, साम्प्रदायिकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध होते ही रहते हैं। इनसे हमारा सामाजिक जीवन कुप्रभावित होता है। अत सामाजिक मनोविज्ञान हमें सामाजिक तनाव को समाप्त कर एक सुखद जीवन कायम करने में मदद करता है।
2. यह सामाजिक विकास (Social Development) में भी मदद करता है। वर्तमान के सामाजिक जीवन में पूर्वाग्रह एवं रुढ़युक्तियां काफी व्याप्त है, जिससे सामाजिक वैमनस्य एवं भेदभाव उत्पन्न होता है। सामाजिक मनोविज्ञान वैमनस्य एवं भेदभाव को समाप्त करने में मदद करता है।
3. आधुनिक समाज में गतिशीलता बहुत अधिक, परिवर्तन की गति बहुत तीव्र है। सामाजिक जीवन को सजग, सरल एवं सफल बनाए रखने के लिए व्यक्तियों का समायोजन (Adjustment) सामाजिक परिवर्तनों के साथ-साथ होना आवश्यक है। सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक मूल्यों, सामाजिक मानकों, सामाजिक शक्ति आदि के बारे में यथोचित ज्ञान उपलब्ध कराकर उन्हें स्वस्थ सामाजिक समायोजन (Social Adjustment) करने में मदद करता है।
4. सामाजिक मनोविज्ञान औद्योगिक विकास में भी काफी सहायक है। जनमत तथा प्रचार (Public Opinion and Propaganda) दो ऐसे क्षेत्र हैं, जहां इनका कुशलता से उपयोग करके औद्योगिक उत्पाद के प्रति अच्छा जनमत तैयार किया जा सकता है। इससे उत्पादित वस्तु की मांग बढ़ जाती है, जो औद्योगिक एवं अर्थव्यवस्था के विकास में सहायक होता है।

मनोवृत्ति/अभिवृत्ति
Attitude

- परिचय
- मनोवृत्ति का अर्थ, परिभाषा एवं अवधारणा
- मनोवृत्ति के तत्व
- मनोवृत्ति की विशेषताएं
- मनोवृत्ति के प्रकार
- मनोवृत्ति एवं संबंधित अवधारणा
  - मनोवृत्ति एवं मत
  - मनोवृत्ति एवं विश्वास
  - मनोवृत्ति एवं मूल्य
  - मनोवृत्ति एवं प्रेरणा
  - मनोवृत्ति एवं रूचि
- मनोवृत्ति का निर्माण
- मनोवृत्ति के प्रकार्य
- मनोवृत्ति परिवर्तन
  - मनोवृत्ति परिवर्तन के प्रकार
  - मनोवृत्ति परिवर्तन के निर्धारक
- मनोवृत्ति की हानियां
- मनोवृत्ति एवं व्यवहार में संबंध
- मनोवृत्ति एवं विचार में संबंध
- नैतिक मनोवृत्ति
- राजनीतिक मनोवृत्ति
- मनोवृत्ति की प्रशासन में उपयोगिता
- अभ्यास प्रश्न

परिचय
Introduction

जीवन की कोई भी अभिव्यक्ति एक क्रिया है, जैसे – चलना, तैरना, नाचना, सोचना, विचारना, कल्पना करना, क्रोधित होना आदि ऐसी सभी क्रियाओं को सम्मिलित रूप से व्यवहार की संज्ञा दी जाती है। चूंकि मानव एक सामाजिक प्राणी है, अत: उसके व्यवहार पर उसके सामाजिक परिवेश का भी प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव आन्तरिक एवं बाह्य दोनों हो सकता है। जब उसके आन्तरिक व्यवहार का उसके सामाजिक परिवेश के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है, तो वह सामाजिक मनोविज्ञान कहलाता है।

मनोवृत्ति/अभिवृत्ति सामाजिक मनोविज्ञान में सर्वाधिक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण अवधारणा है। मानव के आन्तरिक व्यवहार के विभिन्न अवयवों में यह अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा विचार के प्रति व्यक्ति किस प्रकार व्यवहार करेगा, यह बहुत कुछ उस व्यक्ति की उनके प्रति बनी मनोवृत्ति पर निर्भर करता है। व्यवहार ही नहीं, व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व भी उसकी मनोवृत्ति के अनुकूल ही ढलता है।

अर्थ, परिभाषाएं एवं अवधारणा
Meaning, Definitions & Concept

मनोवृत्ति दैनिक जीवन में प्रयोग किया जाने वाला लोकप्रिय शब्द है। साधारण अर्थ में मनोवृत्ति व्यक्ति के मन की एक विशिष्ट दशा है, जिसके द्वारा वह समाज की विभिन्न परिस्थितियों, वस्तुओं, व्यक्तियों आदि के प्रति अपने विचार या मनोभाव प्रकट करता है, जैसे – हिन्दू मुस्लिमों के प्रति एक निश्चित मनोभाव रखते हैं, उच्च जाति के लोग दलितों के प्रति एक विशिष्ट विचार रखते हैं। इसी तरह बाल विवाह, विधवा विवाह के प्रति भी लोग एक विशेष मनोभाव रखते हैं। इन उदाहरणों में जो एक निश्चित विचार या मनोभाव दर्शाया गया है। इसे ही साधारण अर्थ में मनोवृत्ति कहा गया है।

किन्तु सामाजिक मनोविज्ञान में मनोवृत्ति का अर्थ इस साधारण अर्थ से कहीं अधिक वैज्ञानिक, निश्चित एवं वस्तुनिष्ठ है। सामान्य शब्दों में किसी मनोवैज्ञानिक विषय (Psychological Object), अर्थात् – **वस्तु, विचार या व्यक्ति के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक मूल्यांकन या भाव की उपस्थित मनोवृत्ति कहलाती है।**

थर्सटन ने भी मनोवृत्ति को **मूल्यांकन विमा** (Evaluative Dimension) के आधार पर ही परिभाषित किया है। उनके अनुसार किसी मनोवैज्ञानिक विषय के पक्ष या विपक्ष में धनात्मक या ऋणात्मक के भाव की तीव्रता को मनोवृत्ति कहते हैं। उदाहरणार्थ – जिस व्यक्ति की लोकतंत्र के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति है, वह लोकतांत्रिक परम्पराओं एवं संस्थाओं के प्रति अनुकूल भाव रखेगा और तानाशाही प्रक्रिया के प्रति प्रतिकूल रवैया रखेगा। किन्तु यह परिभाषा कुछ मनोवैज्ञानिकों को मान्य नहीं है, क्योंकि इसमें केवल भाव (Affective) पक्ष या मूल्यांकनपरक (Evaluative) पक्ष पर ही बल दिया गया है।

आगे चलकर मनोवैज्ञानिकों ने मनोवृत्ति की **द्वि-विमीय दृष्टिकोण** (Two Dimension Approach) के आधार पर परिभाषित किया है। इन्होंने माना कि मनोवृत्ति में **भावात्मक संघटक** (Affective Component) के साथ-साथ **संज्ञानात्मक संघटक** (Congnitive Component) भी होता है। संज्ञानात्मक संघटक से तात्पर्य किसी वस्तु के संबंध में व्यक्ति में जो विश्वास होता है, उससे होता है, जैसे – कोई व्यक्ति यह कहे कि महिलाएं कमजोर होती हैं, तो इसमें महिलाओं के शक्तिहीन होने का विश्वास अन्तर्निहित है और साथ ही उनके प्रति नकारात्मक भाव भी है।

आधुनिक समय में मनोवृत्ति की अवधारणा और व्यापक हो गई, जिसमें मनोवैज्ञानिकों ने मनोवृत्ति की व्याख्या हेतु **त्रि-विमीय दृष्टिकोण** (Three Dimension Approach) को अपनाया। इस दृष्टिकोण में पहले के दो संघटकों में तीसरा संघटक, अर्थात् – **व्यवहारात्मक संघटक** (Behavioural Component) को जोड़कर उसकी व्याख्या की और मनोवृत्ति को इन तीन संघटकों का एक संगठित तंत्र कहा। इसे ही आधुनिक समाज वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रियों ने मनोवृत्ति का **ABC या CAB मॉडल** कहा है।

सेकर्ड तथा **बैकमेन** के अनुसार वातावरण में कुछ पहलुओं के प्रति व्यक्ति के भावों, विचारों एवं क्रिया करने की पूर्व प्रवृत्तियों (Predispositions) को मनोवृत्ति कहा गया है।

मायर्स के अनुसार मनोवृत्ति किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति की जाने वाली उस सकारात्मक या नकारात्मक मूल्यांकन परख प्रतिक्रिया है, जिसकी अभिव्यक्ति विश्वासों, भावों या निर्दिष्ट व्यवहार के माध्यम से होती है।

इस प्रकार मनोवृत्ति किसी वस्तु (विचार, व्यक्ति या अन्य मनोवैज्ञानिक विषय-वस्तु) के प्रति एक विशिष्ट भावना है, इसलिए इसमें उस वस्तु से जुड़ी हुई परिस्थितियों में एक निश्चित प्रकार के व्यवहार करने की प्रवृत्ति निहित होती है (An attitude is a prticular feeling about something. It therefore involves a tendency to behave in a certain way in situtions which involve that something, whether person, idea of object)। वस्तु के प्रति यह प्रवृत्ति जन्म-जात नहीं होती है, बल्कि अनुभव के द्वारा अर्जित होती है (It is acquired, not inherent)। उदाहरणार्थ – किसी धर्म के प्रति विकसित मनोवृत्ति को ही लीजिए। कौन सीख कर आया था कि अपना धर्म दूसरों से अच्छा है, अन्य धर्म घटिया है। यह सब मानव को सामाजिक परिवेश ने सिखाया है।

अन्ततः मनोवृत्ति की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि **मनोवृत्ति व्यवहार को दिशा प्रदान करने वाली वह अर्जित प्रवृत्ति है, जो व्यक्ति को किसी विशेष वस्तु के प्रति एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने हेतु तत्पर करती है।**

मनोवृत्ति की तत्व/घटक
Elements of Attitude

मनोवृत्ति का निर्माण 3 अवयवों/तत्वों – संज्ञानात्मक/विचारात्मक (Cognitive), भावात्मक (Affective) और व्यवहारात्मक/क्रियात्मक (Behavioural) से होता है।

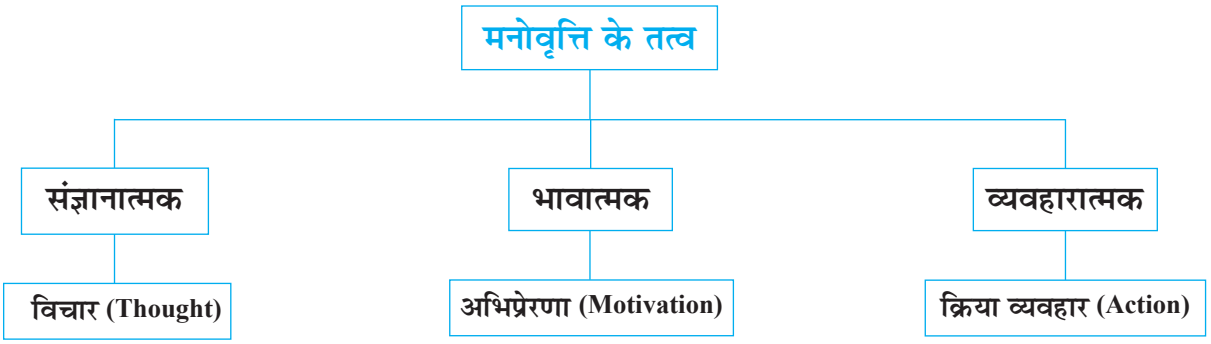

❐ संज्ञानात्मक तत्व (Cognitive Element)

सरल शब्दों में संज्ञान का अर्थ है – जानकारी या ज्ञान, जैसे – मैं किसी वस्तु को जानता हूं। यह जानकारी/ज्ञान सही अथवा गलत हो सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि वह सही है। वस्तुत: यह एक प्रकार से **किसी विषयवस्तु के प्रति हमारा विश्वास होता है**, जो विभिन्न धारणाओं, मतों, प्रत्ययों, विचारों, सूचनाओं आदि के आधार पर बनता है। विचार प्रक्रिया (Thought Process) के निर्माण में यह तत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संज्ञानात्मक तत्व के कारण ही हमारे मन में किसी वस्तु के संबंध में नकारात्मक या सकारात्मक भावना उत्पन्न होती है।

❐ भावात्मक तत्व (Affective Element)

भावात्मक तत्व के अन्तर्गत किसी विचार, वस्तु, व्यक्ति या घटना के प्रति मन में उत्पन्न होने वाली एक **विशेष प्रकार की रुचि-अरुचि, पसंद-नापंसद का भाव** उपस्थित होता है। जब हम किसी व्यक्ति, वस्तु से सम्पर्क स्थापित करते हैं, तब उस व्यक्ति या वस्तु के प्रति हमारे मन में कुछ भाव उत्पन्न होते हैं, जो सकारात्मक या नकारात्मक हो सकते हैं।

❐ व्यवहारात्मक तत्व (Behavioural Element)

व्यवहारिक तत्व से आशय है **निश्चित ढंग से कार्य करने की प्रवृत्ति**। सामान्यत: यह माना जाता है कि किसी वस्तु या विचार के बारे में हम जैसा विश्वास करते हैं, वैसा ही कार्य या व्यवहार करते हैं। हमारे मन में उत्पन्न किसी के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक भावना ही तय करती है कि हमारा व्यवहार कैसा होगा। यह तत्व हमारे मनुष्यों के व्यवहार को निर्देशित व नियंत्रित करता है।

मनोवृत्ति के इन 3 तत्वों को हम निम्नलिखित उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं –

1. किसी व्यक्ति के पास यह जानकारी/ज्ञान हो सकता है कि उसी का धर्म सर्वश्रेष्ठ है। यह जानकारी गलत भी हो सकती है, किन्तु उसे विश्वास होगा कि यह सत्य है (संज्ञानात्मक पक्ष)।
2. इस ज्ञान से वह दूसरे धर्मों के प्रति नकारात्मक भावनाओं (नफरत, घृणा, ईर्ष्या) का अनुभव करेगा (भावात्मक पक्ष)।
3. इस नकारात्मक भावना की उपस्थिति के कारण पर वह दूसरे धर्मों के लोगों को देखकर नकारात्मक प्रतिक्रिया करेगा, जैसे – छूआछूत, घृणावाक् आदि (व्यवहारात्मक पक्ष)।

सामान्यत: परम्परागत् मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि मनोवृत्ति इन 3 तत्वों से मिलकर बनती है, किन्तु आधुनिक मनोवैज्ञानिक इससे सहमत नहीं है। उनका मानना है कि मनोवृत्ति में इन 3 तत्वों में सदैव सामन्जस्य व संगति रहे, ऐसा आवश्यक नहीं है। इन तत्वों की उपस्थित इस बात पर निर्भर करती है कि किसी मनोवृत्ति में कोई तत्व कितना प्रबल है। सामान्यत: संज्ञानात्मक एवं भावात्मक पक्ष में सामन्जस्य एवं संगति होती है, किन्तु क्रियात्मक पक्ष अनुपस्थित रहता है। उदाहरणार्थ – आपको विश्वास है कि धुम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। आपको भय भी है कि आपको कैंसर हो सकता है। किन्तु इसके बावजूद आप सिगरेट पीते रहते हैं। दूसरा, कई बार संज्ञनात्मक एवं भावात्मक पक्ष में भी सामन्जस्य एवं संगति नहीं होती है। जैसे – शिक्षक को जानकारी है कि उसके कुछ छात्रों ने अच्छे से पढ़ाई नहीं की है, किन्तु उसके बावजूद शिक्षक के मन में उन छात्रों के प्रति नकारात्मक भाव पैदा नहीं होता है।

मनोवृत्ति की विशेषताएं
Features of Attitude

1. मनोवृत्तियां **अर्जित** होती हैं (Attitudes are acquired or learned)। कोई भी अभिवृत्ति सामान्यत: जन्मजात नहीं होती है, वह वातावरण में उपलब्ध अनुभवों के द्वारा अर्जित की जाती है। उदाहरणार्थ – भूख, जो जन्मजात मूल प्रवृत्ति है, इसे सीखा नहीं जाता है। जबकि किसी विशेष प्रकार के भोजन के प्रति हमारा आकर्षण एक अर्जित प्रवृत्ति है, जो मनोवृत्ति बन जाती है। यद्यपि कुछ मनोवैज्ञानिक आनुवांशिक कारकों के प्रभाव को स्वीकार करते हैं, जो ये सिद्ध करता है कि मनोवृत्ति **सीमित रूप से जन्मजात** भी हो सकती है।
2. मनोवृत्तियां अपेक्षाकृत **स्थायी** होती हैं (Attitudes are relative enduring states)। एक बार बनने के बाद इनमें आसानी से परिवर्तन नहीं होता है।

3. मनोवृत्तियों में, **प्रेरणात्मक-प्रभाव** पाया जाता है (Attitudes have motivational-affective characteristics)। अभिवृत्तियों के विकास में किसी अभिप्रेरणा का हाथ होता है, जबकि आदत आदि अन्य प्रवृत्तियों में यह आवश्यक नहीं है। उदाहरणार्थ - सीधे हाथ से लिखने को आदत कह सकते हैं, किन्तु उसमें किसी प्रेरणात्मक प्रभाव जुड़ा नहीं है। दूसरी ओर अपने राष्ट्र, धर्म के प्रति बनी हुई मनोवृत्तियों में कोई निश्चित प्रेरणात्मक प्रभाव पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। वस्तुत: मनोवृत्ति में व्यक्ति को प्रेरित करने की क्षमता होती है।
4. मनोवृत्तियों में **व्यक्ति-वस्तु संबंध** पाया जाता है (Attitudes have a subject-object relationship)। किसी भी विशेष वस्तु, समूह, संस्था, मूल्य अथवा मान्यता के प्रति बनी हुई मनोवृत्ति यह स्पष्ट करती है कि इन सभी के प्रति व्यक्ति का कैसा संबंध है।
5. मनोवृत्तियों का प्रसार क्षेत्र **पूर्णत: सकारात्मक से पूर्णत: नकारात्मक** तक फैला होता है (Attitudes range from strongly positive to strongly negative)। वस्तुत: मनोवृत्ति किसी विषय के प्रति इन दो ही प्रकार के विकल्पों से बनती है। जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु या विचार के प्रति आकर्षित होकर उसे पाना चाहता है, तो उसकी मनोवृत्ति की दिशा सकारात्मक मानी जाती है और अगर वह उससे दूर भागना चाहे, तो मनोवृत्ति की दिशा नकारात्मक कहलाती है।
6. मनोवृत्ति व्यक्ति के व्यवहारों को एक **निश्चित दिशा में निर्देशन** करती है।
7. मनोवृत्ति में सामान्यत: **3 तत्वों** से बनती है।

मनोवृत्ति के प्रकार
Types of Attitude

मनोवृत्तियों को सामान्यत: 3 भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है -

1. **सकारात्मक मनोवृत्ति (Positive Attitude)** - यदि मनोवृत्ति किसी वस्तु, व्यक्ति या विचार के प्रति अनुकूल है, तो उसे सकारात्मक मनोवृत्ति कहते हैं।
2. **नकारात्मक मनोवृत्ति (Negative Attitude)** - यदि मनोवृत्ति किसी वस्तु, व्यक्ति या विचार के प्रति प्रतिकूल है, तो उसे नकारात्मक मनोवृत्ति कहते हैं।
3. **उभयनिष्ट मनोवृत्ति (Ambivalent Attitude)** - यदि मनोवृत्ति किसी वस्तु, व्यक्ति या विचार के प्रति अनुकूल और प्रतिकूल दोनों भावनाएं एकसाथ हो, तो उसे उभयनिष्ट मनोवृत्ति कहते हैं।

मनोवृत्ति एवं सम्बन्धित अवधारणाएं
Attitude & Related Concepts

❐ मनोवृत्ति एवं मत (Attitude & Opinion)

मनोवृत्ति एवं मत घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। **मत का आशय किसी विचार, विश्वास या आस्था से है, जिसमें पूर्ण निश्चितता नहीं पाई जाती है।** मत अस्थायी होता है, यह एक तरह का विश्वास है और इसमें मनोवृत्ति की तुलना में परिमार्जन की संभावना अधिक रहती है (Opinion is a belief particularly one that is tentative and still open to modification)। इसके विपरीत मनोवृत्ति अपेक्षाकृत स्थायी होती है तथा इसके कारण सम्बन्धित वस्तु या व्यक्ति के प्रति सक्रिय रूप में व्यवहार किया जाता है। अभिवृत्ति की भाँति मत में भी संज्ञानात्मक घटक पाया जाता है, परन्तु मत में अन्य घटक नहीं पाए जाते हैं। इनमें कुछ अन्तर इस प्रकार हैं -

1. मत में संज्ञानात्मक पक्ष ही पाया जाता है, जबकि मनोवृत्ति में भाव एवं क्रिया प्रवृत्ति भी पाई जाती है।
2. मत अपेक्षाकृत अस्थायी होता है, जबकि मनोवृत्ति अपेक्षाकृत स्थायी होती है।
3. मनोवृत्ति से व्यवहार की दिशा तथा तीव्रता निश्चित की जा सकती है, जबकि मत से नहीं। व्यक्ति एक निश्चित मत रखते हुए भी बहुत सक्रिय होगा, यह आवश्यक नहीं है।

4. मनोवृत्तियां सामाजिक अन्तर्क्रियाओं के आधार पर स्वत: बनती रहती हैं, उनके लिए बहुत चेतन प्रयास नहीं करना पड़ता है, जबकि मत का निर्माण जानबूझकर चेतन स्तर पर किया जाता है।

❐ मनोवृत्ति एवं विश्वास (Attitude & Belief)

मनोवृत्ति एवं विश्वास दो अलग सम्प्रत्यय होते हुए भी परस्पर सम्बन्धित हैं। विश्वास एक प्रकार का संज्ञान ही है। इसका निर्माण किसी वस्तु, विचार या व्यक्ति के बारे में किया जाता है। **विश्व के किसी पक्ष के प्रति व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण एवं संज्ञानों के अपेक्षाकृत स्थायी संगठन को विश्वास कहा जाता है** (A belief is an enduring organization of perceptions and cognitions about some aspect of the individual's world)। विभिन्न वस्तुओं के बारे में जो विचार या संज्ञान बनता है, उसे ही विश्वास कहते हैं (Beliefs are cognitions to thoughts about the characteristics to the objects)। मनोवृत्तियों के निर्माण में विश्वास का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रत्येक मनोवृत्ति के निर्माण में एक विश्वास सन्निहित होता है, वह विश्वास ही उसका संज्ञानात्मक पक्ष होता है। किन्तु विश्वास के लिए अनिवार्य नहीं है कि वह किसी मनोवृत्ति से संबंधित हो। इनमें निम्नलिखित अन्तर हैं –

1. विश्वास में मूलत: संज्ञानात्मक पक्ष, अंशत: व्यवहारात्मक पक्ष तथा भावात्मक पक्ष अनुपस्थित होता है, जबकि मनोवृत्ति सामान्यत: तीनों पक्षों का योग होता है।
2. विश्वास मनोवृत्ति की तुलना में अधिक स्थायी होता है, क्योंकि मनोवृत्तियों का संबंध व्यवहार से होता है, इसलिए इनमें विश्वास की तुलना में परितर्वन आसानी से हो सकता है।
3. विश्वास में भावात्मक घटक का कोई विशेष महत्व नहीं होता है।
4. मनोवृत्ति में प्रेरणा तथा दिशा–निर्देश का गुण होता है, विश्वास में ऐसा प्राय: कम ही देखा जाता है।
5. विश्वास का निर्माण, कल्पना या अंधविश्वास पर निर्भर करता है, जैसे – ईश्वर है, जबकि मनोवृत्ति अनुभव पर आधारित होती है।
6. विश्वास की तुलना में मनोवृत्ति अधिक व्यापक अवधारणा है।

❐ मनोवृत्ति एवं मूल्य (Attitude & Values)

मनोवृत्ति एवं मूल्य भी परस्पर सम्बन्धित संप्रत्यय है। **मूल्य व्यक्ति के वह गहरे एवं दृढ़विश्वास है, जिनके अनुसार वह अपना आचरण निर्धारित करता है।** दूसरे शब्दों में मूल्य का आशय किसी समूह या संस्कृति के सदस्यों द्वारा धारित आचरण की वांछित अवस्था के बारे में विचार से है (Values are ideas about desirable states affairs shared by members of a group of culture)। मनोवृत्ति एवं मूल्य दोनों ही सीखे जाते हैं, सामान्यत: दोनों ही स्थायी होते हैं, एक बार निर्मित हो जाने के पश्चात् इनमें आसानी से परिवर्तन नहीं होता है, दोनों ही व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। मूल्य मनोवृत्तियों को और मनोवृत्तियां मूल्यों को कभी–कभी प्रभावित करती हैं। मनोवृत्तियां प्राय: मूल्यों का ही अनुसरण करती है।

उदाहरण – किसी व्यक्ति का मूल्य दया–करुणा है, तो वह उन सामाजिक संगठनों के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति रखेगा, जो गरीबों के कल्याण हेतु कार्य करते हैं। दूसरा, मूल्यों में परिवर्तन होने से मनोवृत्तियों में भी परिवर्तन हो जाता है। उदाहरण – किसी व्यक्ति के मूल्य पूंजीवादी है, तो वह राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति रखेगा। किन्तु यदि वह समाजवादी मूल्यों को अपना लेता है, तो वह राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति रखेगा।

कभी–कभी मनोवृत्तियां मूल्यों को निर्धारित करती है। उदाहरण – यदि कोई व्यक्ति सत्यनिष्ठ है, तो वह भ्रष्टाचार के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति रखेगा, किन्तु सिविल सेवक बनने के बाद वह भ्रष्टाचारी हो जाए और उसके सकारात्मक मनोवृत्ति विकसित कर ले, तो ऐसी स्थिति में सत्यनिष्ठा नामक मूल्य कमजोर हो जाएगा या लगभग समाप्त हो जाएगा। स्पष्ट है कि मनोवृत्ति एवं मूल्य सम्बन्धित तो है, परन्तु उनमें काफी असमानता भी हैं, जो निम्नलिखित हैं –

1. मूल्य में भावात्मकता की प्रधानता होती है, जबकि मनोवृत्ति में अन्य घटक (संज्ञान एवं क्रिया प्रवृत्ति) भी महत्वपूर्ण होते है।

2. किसी समूह या संस्कृति के सदस्यों में अन्य वस्तुओं के प्रति एक जैसे विचार का पाया जाना मूल्य का द्योतक है, जबकि लोगों की मनोवृत्तियों में असमानता भी पाई जाती है।
3. मनोवृत्ति प्राय: सकारात्मक या नकारात्मक होती है, जबकि मूल्य के अनेक प्रकार हो सकते हैं, जैसे - राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, सैद्धान्तिक आदि।
4. मनोवृत्ति की तुलना में मूल्य अधिक स्थायी होते हैं, उन्हें परिवर्तित करना कठिन होता है।
5. व्यक्ति जिस विचार या वस्तु को महत्व देता है, उसके प्रति तादात्म्य स्थापित कर लेता है, जैसे - परोपकारी व्यक्ति में दूसरों की सहायता तथा उनकी समस्याओं का स्वयं से सम्बद्ध करने की प्रवृत्ति होती है। मनोवृत्ति में एसा होना आवश्यक नहीं है।

❐ मनोवृत्ति एवं प्रेरणा (Attitude & Motivation)

मनोवृत्ति एवं प्रेरणा में भी सम्बन्ध पाया जाता है। अभिप्रेरणा सम्प्रत्यय का उपयोग व्यवहार मे दिशा एवं तीव्रता की व्यख्या के लिए किया जाता रहा है (Motivation is a concept that has long been used to account for direction the intensity of behaviour)। **अभिप्रेरणा व्यक्ति के व्यवहार को दिशा प्रदान** करती है तथा **लक्ष्य प्राप्त होने तक व्यवहार में निरन्तरता का बने रहना** अभिप्रेरणा पर ही निर्भर करता है। वहीं मनोवृत्तियां भी व्यवहार को दिशा निर्देशित करती है। इसी कारण इन सम्प्रत्ययों में काफी घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। प्रत्येक मनोवृत्ति में प्रेरणात्मक गुण पाया जाता है, किन्तु प्रत्येक प्रेरणा का संबंध मनोवृत्ति से हो यह आवश्यक नहीं है। फिर भी इनमें निम्नलिखित अन्तर हैं -

1. मनोवृत्तियां अपेक्षाकृत स्थायी होती हैं, जबकि अभिप्रेरणा का उत्पन्न होना आवश्यकता (Need) पर निर्भर करता है।
2. आवश्यकता की पूर्ति हो जाने पर अभिप्रेरणा का प्रभाव समाप्त हो जाता है, जबकि मनोवृत्तियां स्थायी रूप से व्यवहार को प्रभावित करती रहती हैं।
3. अभिप्रेरणा जन्मजात और अर्जित दोनों ही प्रकार की होती हैं, जबकि मनोवृत्तियां सामान्यत: अर्जित ही होती हैं।
4. अभिप्रेरणा में संज्ञानात्मक घटक की भूमिका कम और मनोवृत्ति में अधिक होती है।
5. अभिप्रेरणा में क्रियात्मक पक्ष (Action Aspect) का महत्व अधिक प्रदर्शित होता है, जबकि मनोवृत्ति में सभी 3 घटक महत्वपूर्ण होते हैं।
6. अभिप्रेरणा का क्षेत्र सीमित और मनोवृत्तियों का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है।

❐ मनोवृत्ति एवं रूचि (Attitude & Interest)

मनोवृत्ति एवं रूचि दोनों का संबंध व्यक्तित्व से है। दोनों ही जन्म-जात न होकर अर्जित प्रक्रियाएं हैं, किन्तु इनकी प्रकृति एवं व्यवहार में अन्तर है। **रूचि से तात्पर्य है कि कोई व्यक्ति एक से अधिक विकल्पों की उपस्थिति में किस प्रकार की क्रियाएं करने के लिए आन्तरिक रूप से प्रेरित होता है।** सरल शब्दों में रूचि से हमारा आशय किसी विशेष चाह से होता है। मनोवृत्ति एवं रूचि में निम्नलिखित अन्तर हैं -

1. रूचि में हम किसी व्यक्ति, विचार या वस्तु के प्रति विशेष लगाव के कारण एक ही दिशा की ओर बढ़ते हैं, जबकि मनोवृत्ति में सकारात्मक व नकारात्मक दोनों दिशाओं में बढ़ा जा सकता है।
2. रूचि प्राय: सकारात्मक विचार होता है, जबकि मनोवृत्ति में अनुकूल एवं प्रतिकूल दोनों तरह के विचार होते हैं।
3. मनोवृत्ति का क्षेत्र रूचि के क्षेत्र की अपेक्षा अधिक व्यापक है। रूचि में व्यक्ति की प्रतिक्रिया उसी तक सीमित रहती है, जिसमें उसे रूचि है।
4. रूचि का प्रयोग अधिकतर व्यवसायिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में होता है, जबकि मनोवृत्ति दिन-प्रतिदिन के व्यवहार मे प्रयुक्त होती है।

मनोवृत्ति का निर्माण
Formation of Attitude

मनोवैज्ञानिकों में यह जिज्ञासा का विषय है कि मनोवृत्तियों का निर्माण कैसे होता है? कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि मनोवृत्तियों का अर्जन होता है। किसी व्यक्ति की मनोवृत्ति उसके अपने व्यक्तित्व और वातावरण की संयुक्त अन्त:क्रिया का परिणाम होती है, तो वहीं दूसरी ओर कुछ मनोवैज्ञानिक इसे सीमित रूप से जन्मजात सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। इस रूप में हम व्यक्ति की मनोवृत्ति के निर्माण अथवा उसके विकास के लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी हैं –

❐ आनुवांशिक कारक (Genetic Factors)

सामान्यत: मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि हमारी समस्त मनोवृत्तियां समाजीकरण की प्रक्रिया में अर्जित की जाती हैं। कोई भी मनोवृत्ति जन्मजात नहीं होती है। किन्तु मनोवैज्ञानिकों ने आधुनिक अनुसंधानों के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि कुछ मनोवृत्तियां जन्मजात होती हैं। जिस प्रकार विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि कुछ बीमारियां आनुवांशिक होती है। ठीक उसी प्रकार कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि मनोवृत्ति के निर्माण में सामाजिक व व्यक्तिगत कारकों के अलावा सीमित रूप से आनुवांशिक कारक भी उत्तरदायी हैं।

मनोवैज्ञानिकों ने आनुवांशिकी कारकों का पता लगाने हेतु समरूपी जुड़वा बच्चों (Identical Twins) और गैर-समरूपी जुड़वा बच्चों (Non-identical Twins) पर अनुसंधान किए। उल्लेखनीय है कि समरूपी जुड़वा बच्चे समान आनुवांशिक ढांचा रखते हैं। इन अनुसंधानों में यह पाया गया कि जुड़वा बच्चों की मनोवृत्तियों में अन्य बच्चों की तुलना में अधिक सह-संबंध था। दूसरा, जिन समरूपी जुड़वा बच्चों को लगभग विपरीत परिस्थितियों में पाला गया था, उनकी मनोवृत्ति में भी सह-संबंध देखा गया।

यद्यपि हम इस तरह के कुछ अध्ययनों के आधार पर निर्णायक रूप से नहीं कह सकते कि आनुवांशिक कारक मनोवृत्ति निर्माण में कितनी और किस प्रकार भूमिका निभाते हैं। फिर भी इस तरह के अनुसंधानों से मनौवैज्ञानिकों ने कुछ सामान्य निष्कर्ष निकाले हैं –

1. अनुवांशिक कारकों का प्रभाव उन्हीं मनोवृत्तियों पर पड़ता है, जिनका संबंध आन्तरिक प्रेरणाओं से है, जैसे – माता-पिता की तरह किसी विशेष व्यंजन के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक मनोवृत्ति।
2. आनुवांशिक कारकों का संबंध इन विषयों से नहीं होता, जिनके लिए चेतना या विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती है, जैसे – धर्म के प्रति मनोवृत्ति सकारात्मक होगी या नकारात्मक यह आनुवांशिक कारणों से तय नहीं होगा।
3. जो मनोवृत्तियां आनुवांशिक कारकों से प्रभावित होती हैं, उनमें अर्जित मनोवृत्तियों की तुलना में परिवर्तन करना कठिन होता है।
4. आनुवांशिक मनोवृत्तियों का व्यवहार पर अर्जित मनोवृत्तियों की तुलना में अधिक गहरा एवं तीव्र प्रभाव होता है।

इनके अलावा कुछ मनोवैज्ञानिकों ने जैविक असमानता को आधार बनाते हुए लड़कों और लड़कियों की मनोवृत्तियों का अध्ययन किया और उनमें पर्याप्त अन्तर पाया। उनका कहना है कि अगर यह मान लिया जाए कि लड़कों और लड़कियों की मनोवृत्तियों में दिखने वाले अन्तर का 100 प्रतिशत सामाजिक कारकों से निर्मित नहीं है और उनका कुछ भाग जैविक कारकों पर आधारित है, तो हमें यह मानना होगा कि मनोवृत्ति के निर्माण में जैविक तथा आनुवांशिक कारक भूमिका निभाते हैं। निष्कर्षत: हम यह कह सकते हैं कि **सीमित रूप में व्यक्ति की मनोवृत्ति निमार्ण में आनुवांशिक कारकों की भूमिका होती है।**

❐ व्यक्ति में निहित कारक (Factors within the Individual)

व्यक्तिगत विभिन्नताएं मनोवृत्तियों को जन्म देती है। वातावरण में कौन, किस प्रकार की मनोवृत्ति ग्रहण करेगा, यह व्यक्ति की अपनी बौद्धिक एवं शारीरिक विशेषताओं पर निर्भर करता है।

1. **शारीरिक वृद्धि एवं विकास (Physical Growth & Development)** – मनोवृत्तियों के विकास में शारीरिक वृद्धि एवं विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वास्थ्य, शारीरिक अक्षमता या शरीर के किसी भी अंग का समुचित कार्य न

करना। व्यक्ति को संवेगात्मक रूप से पीछे धकेलता है, जिससे उसके सामाजिक विकास में बाधा पड़ती है। ऐसे लोगों में प्राय: मनोवृत्तियों का विकास नकारात्मक होता है। जैसे - किसी विकलांग व्यक्ति की खेलों के प्रति मनोवृत्ति प्राय: तटस्थ या नकारात्मक होती है।

2. **बौद्धिक विकास (Intellectual Development)** - मनोवृत्तियों का विकास बौद्धिक विकास से भी प्रभावित होता है। बुद्धि के महत्वपूर्ण अवयव, जैसे - स्मरण शक्ति, सोचने-विचारने, तर्क एवं कल्पना करने की शक्तियां आदि मनोवृत्तियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उदाहरणार्थ - कुशाग्र बुद्धि का व्यक्ति शतरंज के लिए सकारात्मक मनोवृत्ति रख सकता है।

❐ सामाजिक कारक (Social Factors)

मनोवृत्तियों का निर्माण व विकास व्यक्तिगत रूप में न होकर सामूहिक रूप में ही होता है। जिस समूह विशेष से व्यक्ति का अधिक लगाव होता है, उस समूह विशेष की मनोवृत्तियों को ही व्यक्ति धारण कर लेता है। उसकी मनोवृत्ति का निर्माण पूर्ण रूप से सामाजिक वातावरण की देन है। वातावरण से संबंधी कारक व्यक्ति के घर परिवार से लेकर उसके चारों ओर फैले विस्तृत सामाजिक दायरे तक उसे प्रभाव में लाकर उसकी मनोवृत्तियों को ढालती रहती है। ये सामाजिक कारक निम्नलिखित हैं -

1. **घर एवं परिवार (House & Family)** - मनोवृत्तियों के निर्माण की प्रारंभिक प्रक्रिया घर एवं परिवार से ही शुरू होती है। बालक में **अनुकरण की प्रवृत्ति** बहुत अधिक होती है। वह इसी आधार पर अपने माता-पिता, बड़े भाई-बहन से आत्मसात कर उनकी मनोवृत्तियों को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लेता है।
2. **सामाजिक व सांस्कृतिक वातवारण (Social & Cultural Factors)** - अन्य प्रकारों के व्यवहारों की ही भाँति मनोवृत्ति के निर्माण व विकास पर **संस्कृति व समाज का व्यापक रूप से प्रभाव** पड़ता है। प्रत्येक समाज व संस्कृति की अपनी-अपनी मान्यताएं, विश्वास, मानक तथा विचारधाराएं होती हैं। व्यक्ति का समाजीकरण उन्हीं के संदर्भ में होता है। बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता है, उसका सामाजिक दायरा फैलता चला जाता है। वह कई सामाजिक व सांस्कृतिक समूहों का सदस्य बनता है। जिस समूह व संस्कृति के प्रति अधिक निष्ठा होती है, उसकी मनोवृत्तियों को वह अपना लेता है। उदाहरणार्थ - खाप पंचायत।

❐ समूह संबंध (Group Affiliation)

मनोवृत्ति निर्माण में समूहों की सदस्यता का भी व्यापक प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति जिस समूह का सदस्य होता है या जिसकी सदस्यता समय-समय पर ग्रहण करता है, उसमें उस समूह की विचारधारा, मान्यताओं, मूल्यों, विश्वासों एवं प्रतिमानों के अनुरूप मनोवृत्तियां भी विकसित होने लगती हैं। मनोवृत्ति निर्माण में 03 प्रकार के समूह संबंध का प्रभाव देखा गया है -

1. **प्राथमिक समूह (Primary Group)** - प्राथमिक समूह ऐसे समूह को कहा जाता है, जिसमें **सदस्यों की संख्या साधारणत: कम** होती है और उनमें **घनिष्ठ, अनौपचारिक एवं प्रत्यक्ष संबंध** (Face to Face Relationship) होते हैं। उदाहरण - परिवार, खिलाड़ियों का समूह आदि। चूंकि प्राथमिक समूह के सदस्यों में अधिक सहयोग, भाईचारा एवं सहानुभूति का गुण पाया जाता है, यद्यपि कभी-कभी सामूहिक दबाव होता है। अत: इसका एक सदस्य ठीक वैसी ही मनोवृत्ति विकसित करता है, जैसी अन्य सदस्यों की होती है।
2. **द्वितीयक समूह (Secondry Group)** - द्वितीयक समूह ऐसे समूह को कहा जाता है, जिसमें **सदस्यों की संख्या अधिक** होती है और उनमें **औपचारिक संबंध** होता है, जैसे - एन. सी. सी. आदि। द्वितीयक समूह के अपने कुछ मूल्य, सिद्धान्त एवं विचारधारा होती है, जिसका अनुपालन करना सदस्यों का कर्तव्य होता है। अत: एक सदस्य समूह के सिद्धान्त एवं विचारधारा के अनुरूप मनोवृत्ति का निर्माण करता है।
3. **संदर्भ समूह (Reference Group)** - संदर्भ समूह से तात्पर्य ऐसे समूह से होता है, **जिसके साथ व्यक्ति आत्मीकरण** (Identification) कर लेता है। चाहे वह उस समूह का सदस्य हो या न हो, अर्थात् - उस समूह की सदस्यता होना अनिवार्य नहीं है। प्राय: संदर्भ समूह के लक्ष्य, मूल्य आदि को अपनाकर व्यक्ति अपने व्यवहार एवं चरित्र